रवि शाक्य
इखाछँ, यल

पुरातत्त्व प्रकाशन माला—४

प्राचीन लिपि विकास

पं० शङ्करमान राजवंशी
द्वारा सम्पादित

प्रकाशक :
श्री ५ को सरकार, पुरातत्त्व र संस्कृति विभाग
नेपाल

प्रकाशक :

श्री ५ को सरकार

पुरातत्त्व र संस्कृति विभाग

नेपाल

प्रथम संस्करण

वि० सं० २०१७

मूल्य

दुई शब्द

नेपाल अधिराज्यभित्र विभिन्न प्राचीन लिपिमा लेखिएका सामग्री भएका कीर्ति-स्तम्भ, सुवर्ण-पत्र, ताम्र-पत्र, ताड़-पत्र, काष्ठ-पत्र, इष्टिका-पत्र, भुर्ज-पत्र, हस्तलिखित पुस्तक र अनेक कागजातहरू यत्र-तत्र प्रसस्त छरिएका पाइन्छन्। यी सब महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्रीहरूको अन्वेषण, अध्ययन र अनुसन्धान निमित्त प्राचीन लिपिको ज्ञान हुनु अत्यावश्यक छ। यसै अभावको पूर्तिका निमित्त विभिन्न लिपि माला प्रकाश गर्ने तर्जुमा गरिएको हो। आशा छ, यी पुस्तिकाहरू पुरातत्त्व प्रेमी सबै महानुभाव र विद्यार्थीहिरूका लागि उपयोगी सिद्ध हुने छन्।

श्री ५ को सरकार
पुरातत्त्व र संस्कृति विभाग
नेपाल
२०१७ आषाढ़ ३०

सत्यमोहन जोशी
डाइरेक्टर

विषय-सूची

क्रम	विवरण	पृष्ठ
१	विभिन्न अक्षरका स्वरवर्ण	१
२	विभिन्न अक्षरका व्यञ्जनवर्ण	२-६
३	विभिन्न अक्षरका संख्या	७-८

उदाहरणमाला

४	लुम्बिनीको अशोकस्तम्भको अभिलेख	१०
५	निग्लिहवाको अशोकस्तम्भको अभिलेख	११
६	चाँगुको राजा मानदेवको स्तम्भाभिलेख	१२
७	पू० १ नं० पलाञ्चोकको राजा मानदेवका समयको अभिलेख	१३
८	पशुपतिको द्वितीय जयदेवको अभिलेख	१४-१५
९	मोटे अक्षरका विभिन्न उदाहरण	१६
१०	सरकारी राष्ट्रिय पुस्तकालयमा रहेको चण्डीमहात्म्यबाट	१७-१८
११	वीरपुस्तकालयमा रहेको पञ्चरक्षाबाट	१९-२०
१२	सरकारी राष्ट्रिय पुस्तकालयमा रहेको शतसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिताबाट	२१-२२
१३	वीरपुस्तकालयमा रहेको वाल्मीकिरामायणबाट	२३-२४

[स्वरवर्ण]

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोटे	रञ्जना	भुजिमोल	पाचुओल	देवनागरी
	ओं	ओं	ओं	ओं	ओं	ओं	ओं
अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ	अ
आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ	आ
इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ	इ
ई	ई	ई	ई	ई	ई	ई	ई
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ
ऊ	ऊ	ऊ	ऊ	ऊ	ऊ	ऊ	ऊ
ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ	ऋ
ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए	ए
ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ	ऐ
ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ	ओ
अं	अं	अं	अं	अं	अं	अं	अं
अः	अः	अः	अः	अः	अः	अः	अः

[व्यञ्जनवर्ण]

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोटे	रञ्जना	भुजिमोल	पाचुमोल	देवनागरी
क	क	क	क	क	क	क	क
ख	ख	ख	ख	ख	ख	ख	ख
ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग
घ	घ	घ	घ	घ	घ	घ	घ
ङ	ङ	ङ	ङ	ङ	ङ	ङ	ङ
च	च	च	च	च	च	च	च
छ	छ	छ	छ	छ	छ	छ	छ
ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज	ज
झ	झ	झ	झ	झ	झ	झ	झ
ञ	ञ	ञ	ञ	ञ	ञ	ञ	ञ

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोटे	रञ्जना	भुजिमोल	पाचुमोल	देवनागरी
ट	ट	ट	ट	ट	ट	ट	ट
ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ
ड	ड	ड	ड	ड	ड	ड	ड
ढ	ढ	ढ	ढ	ढ	ढ	ढ	ढ
ण	ण	ण	ण	ण	ण	ण	ण
त	त	त	त	त	त	त	त
थ	थ	थ	थ	थ	थ	थ	थ
द	द	द	द	द	द	द	द
ध	ध	ध	ध	ध	ध	ध	ध
न	न	न	न	न	न	न	न

पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	मोटे	रमना	भुजिमोल	पाचुमोल	देवनागरी
प	प	प	प	प	प	प
फ	फ	फ	फ	फ	फ	फ
ब	ब	ब	ब	ब	ब	ब
भ	भ	भ	भ	भ	भ	भ
म	म	म	म	म	म	म
य	य	य	य	य	य	य
र	र	र	र	र	र	र
ल	ल	ल	ल	ल	ल	ल
व	व	व	व	व	व	व
श	श	श	श	श	श	श

पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोट	रञ्जना	भुजिमोल	पाचुमोल	देवनागरी
ष	ष	ष	ष	ष	ष	ष
स	स	स	स	स	स	स
ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह
ह	ह	ह	ह	ह	ह	ह
ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग
ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग
क्ष	क्ष	क्ष	क्ष	क्ष	क्ष	क्ष
क्ष	क्ष	क्ष	क्ष	क्ष	क्ष	क्ष
क्ष	क्ष	क्ष	क्ष	क्ष	क्ष	क्ष
क्ष	क्ष	क्ष	क्ष	क्ष	क्ष	क्ष

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	ज्ञातलिच्छवि	भोटे	रञ्जना	भुजिमोल	पासुमोल	देवनागरी
क	क	क	क	क	क	क	क
का	का	का	का	का	का	का	का
कि	कि	कि	कि	कि	कि	कि	कि
की	की	की	की	की	की	की	की
कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु	कु
कू	कू	कू	कू	कू	कू	कू	कू
कृ	कृ	कृ	कृ	कृ	कृ	कृ	कृ
के	के	के	के	के	के	के	के
कै	कै	कै	कै	कै	कै	कै	कै
को	को	को	को	को	को	को	को
कौ	कौ	कौ	कौ	कौ	कौ	कौ	कौ
कं	कं	कं	कं	कं	कं	कं	कं
कः	कः	कः	कः	कः	कः	कः	कः

[संख्या]

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोटे	रञ्जना	भुजिमोल	गचुमोल	देवनागरी
१	१	१	१	१	१	१	१
२	२	२	२	२	२	२	२
३	३	३	३	३	३	३	३
४	४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५	५
६	६	६	६	६	६	६	६
७	७	७	७	७	७	७	७
८	८	८	८	८	८	८	८
९	९	९	९	९	९	९	९

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोटे	रुजाना	भुजिमोल	फाचुमोल	देवनागरी
१	१	१	१०	१०	१०	१०	१०
२	२	२	२०	२०	२०	२०	२०
३	३	३	३०	३०	३०	३०	३०
४	४	४	४०	४०	४०	४०	४०
५	५	५	५०	५०	५०	५०	५०
६	६	६	६०	६०	६०	६०	६०
७	७	७	७०	७०	७०	७०	७०
८	८	८	८०	८०	८०	८०	८०
९	९	९	९०	९०	९०	९०	९०
१०	१०	१०	१००	१००	१००	१००	१००

ब्राह्मी	पूर्वलिच्छवि	उत्तरलिच्छवि	भोटे	रञ्जना	भुजिमोल	पाचुमोल	देवनागरी
	स	सृ	२००	७००	८००	८००	२००
	स	सृ	३००	७००	९	३००	३००
सा	सा	सृ	५००	९००	९००	७००	४००
	सा	सृ	५००	७००	१००	७००	५००
	सा	सृ	७००	७००	७००	६००	६००
	सा	सृ	७००	७००	७००	७००	७००
	सा	सृ	८००	८००	८००	८००	८००
	सा	सृ	८००	९००	९००	९००	८००

टिप्पणी— अघिल्ला लिच्छविकालको लिपिलाई गुप्ता लिपि र पछिल्ला लिच्छविकालको लिपिलाई कुटिला लिपि भनी व्यवहार गरिआएको थियो। अबदेखि गुप्ता लिपिलाई पूर्वलिच्छविलिपि र कुटिला लिपिलाई उत्तरलिच्छवि लिपि भन्ने भनी श्री ५ को सरकार पुरातत्त्व तथा संस्कृति विभागबाट निर्णय भएकोले यहाँ सोही नाम लेखिएको।

उदाहरणमाला

लुम्बिनीको अशोकस्तम्भको अभिलेख

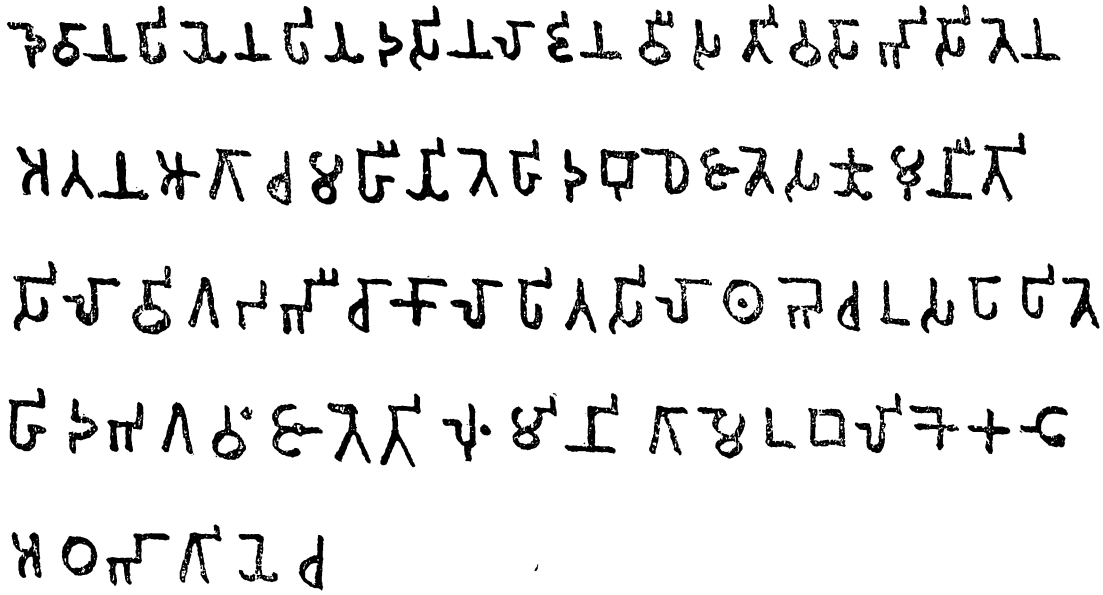

[पुरातत्त्वविभागको संग्रहबाट]

देवानपियेनपियदसिनलाजिनवीसतियसाभिसितेन
अतनआगाचमहीयिते हिदबुधेजातेसक्यमुनीति
सिलाविगडभीचाकालापितसिलाथंभेचउसापिते
हिदभगवंजाते तिलुंमिनिगामेउबलिकेकटे
अठभागियेच

निग्लिहवाको अशोकको अभिलेख

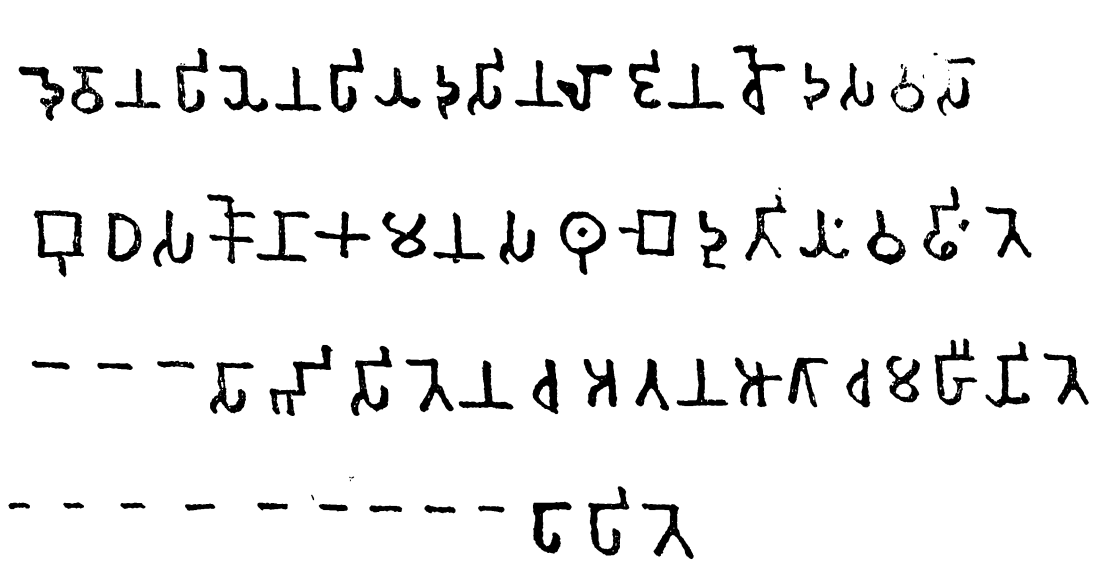

[पुरातत्त्वविभागको संग्रहबाट]

देवानपियेन पियदसिन लाजिन चोदस वसा
भिसितेन च अतन आगाचमहीयिते
बुधसकोनाकमनसथुंबेदुतियंवढिंते
- - - -

चाँगुको राजा मानदेवको स्तम्भाभिलेख
बाट

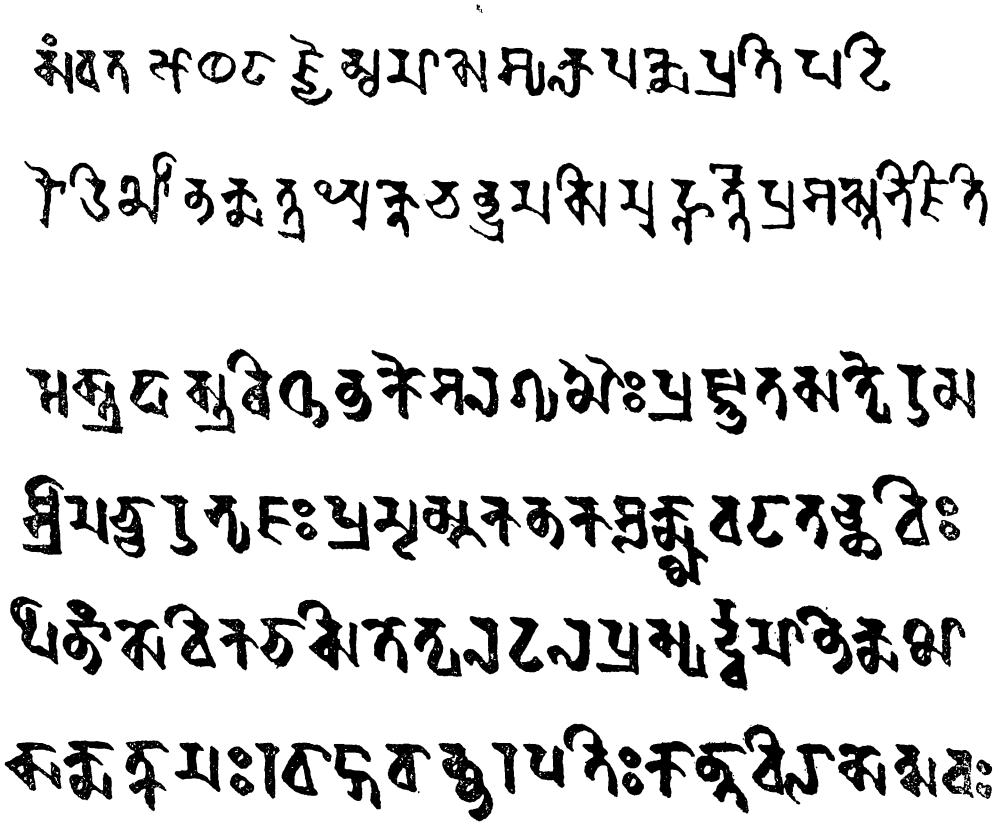

[श्रीपुस्तकालय]

संवत् ३८६ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदि
रोहिणीनक्षत्रयुक्ते चन्द्रमसि मुहूर्त्ते प्रशस्तेभिजिति

अस्त्रापास्त्रविधानकौशलगुणैः प्रज्ञानसन्तौ रुष
श्रीमच्छारुभुजः प्रमृष्टकनकश्लक्ष्णावदातच्छविः
पीनांसो विकचासितोत्पलदलप्रस्पर्द्धमानेक्षण
साक्षात्काम इवाङ्गवान्नरपतिः कान्ताविलासोत्सवः

पू.१नं. पलाञ्चोकको राजा मानदेवका समयको

अभिलेख

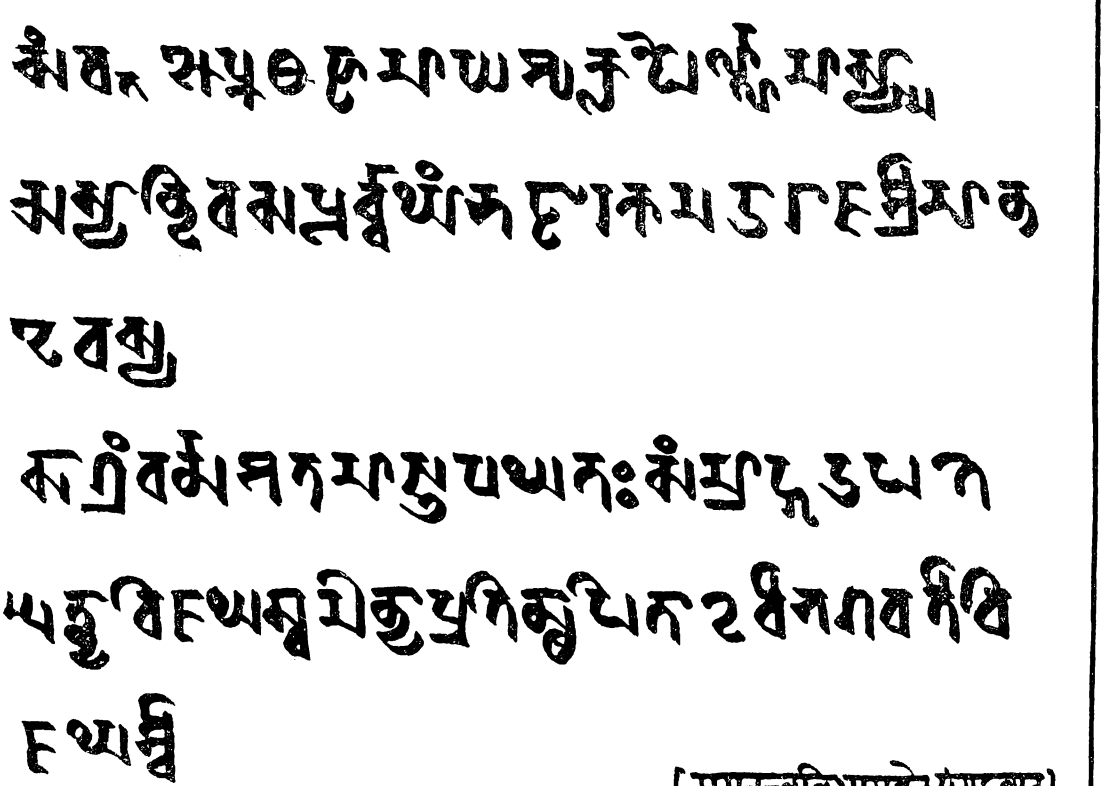

[पुरातत्त्वविभागको संग्रहबाट]

संवत् ४२५ माघ शुक्ल पौर्णमास्याम्
अस्यां दिवसपूर्व्वायां भट्टारक महाराजश्रीमान
देवस्य
सांवत्सरशतमाज्ञापयतः संप्राप्तहृपते
स्पत्या विजयस्वामिन्या प्रतिष्ठापिता देवी भगवती वि
जयश्री

पशुपतिको द्वितीय जयदेवको अभिलेख

बाट

---श्रीहयदेवकमकृपतिः प्रादुर्बभूव ॥ पक्षदपङ्क्तिः
--------कृष्णविहितिकहयदेवकस्तः ॥ श्रीमाकुमुदपृथ
देवःक्षितीन्द्रास्तमुपःमुगनमाश्रयकृपाः ॥ ऋतु
नृपः सङ्ग्रहदेवकमाश्रीपद्मदेवपुरपरिनमन्
श्रीमाकुमुदकृपतिमूलमुनमदयकैहदेवःक्षितिप्रमिद्धः ॥ व
मकृष्णं वलकक्षुकाकः माकृतिविग्रहः । मुमीदुमकुदेव
माहृकुमायकवहितः ॥ मक्ष्याकुमपुरयहदेवःक्षितिनी
मासुनमुग्रा
दम---श्रीकमकुहदेवः । --------
----कृष्णमिनमाधवमुनिपहंमकुमुक्तकमनमसः
श्रीमिवहदेवःकृतिमकलकक्षुनमुनुवः ॥ हवीवकृवलकुपौ
नवीकुलश्रीवर्मा
ब्रह्मपिण्डो मुकिकृपिनवैपिकुपतिगाणश्रीकगवर्मुकः ॥
कृष्णिश्रीमगवपियमुमकमःकुटिकुमकमुमाधुतश्री
पिवनवमाकृतिकुसश्रीवमुहमाहा ॥
नमाकुपिनुसमुसमनहिकाकाहमुःपनाहसश्रीहय
देवःकुवगमःश्रीवमुहमाहः ॥
---------मवम मएकु कनिकनुकवमाम ॥

--- श्रीजयदेवनामनृपतिः प्रादुर्बभूवापरः ॥ एकादशाप्तिति
---------- त्वान्तरे विजयिनो जयदेवनाम्नः ॥ श्रीमान्बभूव वृष
देव इति प्रतीतो राजोत्तमः सुगतशासनपक्षपाती ॥ अभू
त्ततः शङ्करदेवनामा श्रीधर्म्मदेवोप्युदपादि तस्मात्
श्रीमानदेवो नृपतिस्ततो भूत्ततो महीदेव इति प्रसिद्धः ॥ व
सन्त इव लोकस्य कान्तः शान्तारिविग्रहः ॥ आसीद्वसन्तदेवो
स्माद्दान्तसामन्तवन्दितः ॥ अस्यान्तरेप्युदयदेव इति प्रसिद्धो
शाज्ञातस्मयो
दश -- श्चनरेन्द्रदेव । ----------
-----हर्त्ता संश्रितसाधुवर्गविपदां सत्यस्य वक्ता ततो जातः
श्रीशिवदेव इत्यभिमतो लोकस्य भर्त्ता भुवः ॥ देवीवाहुबलाढ्यमौरव
खरैः कुलश्रीवर्म्मे
चूडामणिख्यातिहेपितवैरिभूपतिगणश्रीभोगवर्म्मोद्भवा ॥ दोहिश्री
मगधाधिपस्य महतः श्रीआदित्यसेनस्ययाव्यूढाश्रीरिव तेन साप्ति
भुजा श्रीवत्सदेव्यादरात् ॥
तस्माद्भूपिभुजोप्यजायत जिता रातेरजय्यः परो राजा श्रीजयदेव इ
त्यवगतः श्रीवत्सदेव्यात्मजः ॥
---------- संवत् १५७ कार्त्तिकशुक्लनवम्याम् ॥

ཨོ་མ་ཎི་པད་མེ་ཧཱུ ṁ	= ॐ मणिपद्मेहूँ
ཨོ་ནམ་བུ་དྷ་ཡ	= ॐ नमोबुद्धाय
ཨོ་ནམ་ཏ་ཡ	= ॐ नमोधर्माय
ཨོ་ནমঃ་ས་ঙ্ঘ ཡ	= ॐ नमः सङ्घाय
ཨོ་ནམ་ཨ་ཏ་ཡ	= ॐ नमोरत्नत्रयाय
ཨོ་ནམ་ཏ་ཡ	= ॐ नमो भगवत्यै
ཨོ་ནམ་ཝ་ཛ্র ས ত্ত্ব ཡ	= ॐ नमोवज्रसत्वाय
ཨོ་ནমঃ་ཤ་ཏ ས ཧ ས্র ི ཀ ཱ ཡ ཻ	= ॐ नमोशतसाहस्रिकायै
ཨོ་ནমঃ ཨ ཪ ྱ ཕ ྲ ཛ ྙ ཕ ཱ ར ྱ ི ཏ ཱ ཡ ཻ	= ॐ नमआर्यप्रज्ञापारमितायै
ཨོ་ནম ཧ ེ ར ུ ཀ ཱ ཤ ྲ ཱ ི ཙ ཀ ྲ ས ཾ ཝ ཱ ཡ	= ॐ नमोहेरुकश्रीचक्रसंवराय

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्रेयोऽस्तु सम्वत् ५२१ वैशाखशुक्लपञ्चम्यां तिथौ ॥ मूलनक्षत्रे ॥ शिवयोगे ॥ आदित्यवासरे ॥ श्रीश्रीश्रीमत्पशुपतिचरणकमलसेवित श्रीश्रीश्रीमानेश्वरीष्टदेवतावरलब्धप्रसादवीरनारायणजुवराजश्रीश्रीजयधर्म्ममल्लदेवस्य विजयराज्ये ॥

नेपालेऽस्ति महीपतीश्वरवरो दाता गुणग्राहको
दीनानां सकलार्थिनाञ्च महतां सत्कल्पवृक्षोपमः ।
नातः सूर्यकुलावतंसतिलके सर्व्वान्निपून्निर्जितो
वीरः श्रीजयकीर्त्तिमल्लनृपतिः श्रीरूपनारायणः ॥

रूपोत्तमः सकलनीतिविदाम्वरिष्ठो
नाट्याङ्गशास्त्रगुणगीतमहाप्रवीणः ।
सत्सुंदरीहृदयमोहनमन्मथश्रीः
श्रीकीर्त्तिमल्लनृपतेरिपुचक्रमल्लः ॥

तस्याज्ञां शिरसाधृत्वा लिपिकरेण महात्मना ।
जयपतिना समालेखि चण्डीमाहात्म्यपुस्तकः ॥

वीरपुस्तकालयमा रहेको पञ्चरक्षा पुस्तक

बाट

---

१ नमो भगवत्यै आर्य महामायूर्यै ॥ प्रथमायां श्रुतिमक
स्मिन्नमयतीमवाप्तोऽमृतविद्यमिम ॥ मृपुत्रकटपवृक्ष दक्षिणे
यात्रेवद्वारावरवनेदक्षप्रकाशवनेमध्ये भद्रगाकिङ्कर्मस्थानसा
द्भमद्रथाद्वलकिकिङ्कलकै४ ॥ तेद्यथा । आयुष्मतीवेलावियुर्द्वल ।
आयुष्मतीवमहामौद्गल्यायनी । आयुष्मतीवमहाकात्यायनी । आ
युष्मतीवमगाकात्यायनी । आयुष्मतीवनदीकात्यायनी । आयुष्मती
वाकविग्रीकात्यायनी । आयुष्मतीवाशुकीकौलिन्यनी । आयुष्मतीव
महाकात्यायनी । आयुष्मतीवकुलनी । आयुष्मतीवाश्वल । आ
युष्मतीवकौशिलनी । आयुष्मतीवमामाकनी । आयुष्मतीवाश्वजिता ।
आयुष्मतीवमूर्द्धिनी । आयुष्मतीवमवाहुनी । आयुष्मतीवानिकि
नी । आयुष्मतीवरवेनी । आयुष्मतीवनिष्टिकनी । आयुष्मतीवा
नेष्टनी ॥ एवमुमुखेवद्वर्द्धयाद्वलकिकिङ्कलकै४ । - - - - - - -
सम्वत् ३६७ फाल्गुनशुक्लपक्षदशम्यां आदित्यदिनवाङ्गश्रीमदेकोय
मल्लिदेवस्यविजयराज ॥ शुभमस्तु सर्वजगतां ॥ ० ॥

ॐ नमो भगवत्यै आर्य महासाहस्रप्रमर्दन्यै ॥ एवम्मया श्रुतमेकस्मिन्समये भगवान्राजगृहे विहरति स्म ॥ गृध्रकूटे पर्वते दक्षिणे पार्श्वे वङ्गोचररत्नेक्षप्रभासे वनषण्डे महता भिक्षुसंघेन सार्द्धमर्द्धत्रयोदशभिर्भिक्षुशतैः ॥ तद्यथा । आयुष्मताच शारिपुत्रेण । आयुष्मताच महामौद्गल्यायनेन । आयुष्मताच महाकाश्यपेन । आयुष्मताच गयाकाश्यपेन, आयुष्मताच नदीकाश्यपेन । आयुष्मताचोरुविल्वाकाश्यपेन । आयुष्मताचाज्ञातकौण्डिन्येन । आयुष्मताच महाकात्यायनेन । आयुष्मताच वकुलेन । आयुष्मताच वाष्पेण । आयुष्मताच कोष्ठिलेन । आयुष्मताच वागीसेन । आयुष्मताचाश्वजिता । आयुष्मताच सुभूतिना आयुष्मताच सुबाहुना । आयुष्मताचानिरुद्धेन । आयुष्मताच रेवतेन आयुष्मताच नन्दिकेन । आयुष्मताचानन्देन । एवम्प्रमुखैरर्द्धत्रयोदशभिर्भिक्षुशतैः । ------- सम्वत् ३६७ फाल्गुणशुक्लैकादस्यामादित्यदिने राज्ये श्रीमदभयमल्लदेवस्य विजयराजे ॥ शुभमस्तु सर्वजगतां ॥०॥

सरकारी राष्ट्रिय पुस्तकालयमा रहेको

शतसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता

पाट

शतसाहस्र्याः प्रज्ञापारमिताया द्वादशः परिवर्तः । प्रथमस्तः समाप्तः ॥ ॥ श्रीमद्राजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टारक श्रीमच्छ्रीश्रीसिद्धिनरसिंहमल्लदेवस्य विजयराज्ये ॥

---------- सम्वत् ५३२ वर्षे प्रथमाषाढशुक्लद्वितीयायां तिथौ रविदिने पुनर्वसुनक्षत्रे योगे वृद्धियोगानुकूले । श्रीजयमुनिवौद्धाचार्येलिखितसमाप्तकृतमिति ॥ ----

श्रीश्रीनिवासनरदेवराजायाज्ञात्प्रज्ञानां प्रतिपालदक्षः । तस्यप्रसादाच्च विशिष्यमाणं लिखप्रज्ञासकलीसलक्षं ॥ यच्छ्रीनिवासानयधर्मवारीददौ विवाहौ लिखनाय प्रज्ञां ॥

अब्दनेपालिकख्यातग्रहवह्निसंयुत ।
मासतुप्रथमाषाढशुक्लयक्षद्वितीयके ॥
पुनर्वसौ च नक्षत्रे वृद्धियोगे च दिने ।
प्रज्ञापारमितापूर्वं जयमल्लिखितानुरे ॥

शतसाहस्र्याः प्रज्ञापारमितायाः द्वादशः परिवर्त्तः । प्रथम खण्डः समाप्त इति ॥ ॥श्रीमद्राजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टारक श्रीमच्छ्री श्रीसिद्धिनरसिंहमल्लदेवस्य विजयराज्ये ॥ ---------- सम्वत् ७६९ प्रथमाषाढशुक्लद्वितीयायां शनैश्चरदिने पुनर्वसुनक्षत्रे योगे वृद्धि शुभानुकूले । श्रीरयमुनिवोद्धाचार्येण लिखितं समाप्तकृतमिति ॥ ----

श्रीश्रीनिवासो नरदेवराजा यो भूत्प्रजानां प्रतिपालदक्षः ।
तस्य प्रसादाच्च विजित्य मारान् लिलेख प्रज्ञां सकलां सलक्षा ॥
यच्छ्रीनिवासो नयधर्मवारी ददौ विबोद्धी लिखनाय प्रज्ञां ॥

अब्दे नेपालिके ख्याते ग्रहषड्गिरिसंयुते
मासे तु प्रथमाषाढे शुक्लपक्षे द्वितीयके ।
पुनर्वसौ च नक्षत्रे वृद्धियोगे शनेर्दिने
प्रज्ञापारमिता पूर्णा जगाम लिखिता शुभं ॥

प्राप्य भूयिष्ठयावस्थसर्वतः प्रविलोकयन्। याऽजनानीमतस्यान्त
वनराजीयदर्शह। रुचिरवृक्षयतान्नवविविधद्रुमाभिनिं। द्वीपि
शाखामृगोर्दमलाद्यावनंमहत्। सागरंसागरानूपान्सागरा
नूपजनद्रुमान्। सागरस्यवपत्नीनांमुखानिचवलोकयन्। समहा
मिघसंकाशंवीक्षन्नात्मानमात्मवान्। निरुक्ष्मनमिवाकाशंवकारम
तिमान्मतिं। कायवृद्धिप्रवेशंचमम्मृष्टिवाक्ष सा।.....
स्यार्थवामायाकिंचिन्नाकाण्डसमुद्रलंघनंसमाप्तं॥संवत्
१०७९ आषाढवदि ४ महाराजाधिराज पुष्पावलोकासाभवं
शाकुवाराकुवाजश्रीमहाक्षयादवकुक्षमानतीरकुक्लीकल्या
लविजयराज्ञानयालाटशीषठालुशालिकश्रीआनन्द।

प्राप्तभूयिष्ठपारश्च सर्वतः प्रविलोकयन् । योजनानां शतस्यान्ते
वनराजीं ददर्श ह । रुचिरश्च पतन्नेव विविधद्रुमशोभितं । द्वीपि
शार्दूलमृगैर्दृष्टं मलयोपवनं महत् । सागरं सागराभूषान् सागरा
नुपजान् द्रुमान् । सागरस्य च पत्नीनां मुखानि व्यवलोकयन् । स महा
मेघसंकाशं वीक्ष्यन्नात्मानमात्मवान् । निरुत्सनमिवाकाशं चकार म
तिमान्मतिं । कायवृद्धिप्रवेशञ्च मम दृष्ट्वैव राक्षसा ----------
इत्यार्षे रामायणे किष्किन्ध्याकाण्डे समुद्रलंघनं समाप्तं ॥ संवत्
१०७९ आषाढ वदि ४ महाराजाधिराज पुण्यावलोकसोमवं
शोद्भव गरुडध्वज श्रीमद्राघ्रिदेव भुजमानतीरभुक्तौ कल्या
णविजयराज्ये नेपालदेशीय भाण्डशालिक श्रीआनन्द ।